इस्लाम के जगमगाते तीन सितारे

आलीजनाब मौलाना कौसर नियाज़ी साहब

हज़रात उलमाए केराम, शोअराए ईज़ाम ख़्वातीन व हज़रात!

अभी मेरे एक दोस्त कह रहे थे कि इस्लाम में एक ही खातून ऐसी हैं जिनकी शायरों ने और आलिमों ने तारीफ़ की है। मैं सोच रहा था कि ईसाइयों का यह अक़ीदा कि एक में तीन है और तीन में एक है और जिसके खिलाफ़ जिसको ग़लत साबित करने के लिए मैंने एक किताब भी लिखी है क्या किसी पहलू से यह दुरूस्त तो नहीं? किसी जगह इसका कोई मायने निकलता है कि नहीं निकलता मैं अपने दोस्त की यह बात सुनकर तौहीद (एक) में तस्लीस (तीन) है और तस्लीस में तौहीद पर एक ख़ास अन्दाज़ में एक ख़ास मानी में ईमान ले आया। मुझे यूँ लगा कि जब मेरे दोस्त यह बात कह रहे थे कि जनाबे ज़हरा स0 ही को इस्लाम में वह औरत माना गया है तो मैंने देखा कि जनाबे फ़ातेमा तीन तीन के रूप में मुझे जनाबे खदीजा नज़र आईं और फिर मैंने देखा कि जो तारीफ़े जनाबे खदीजतुल कुबरा की हो रही हैं वह सब जनाबे ज़हरा स0 के पंहुच रही हैं और जो जनाबे ज़हरा स0 की हो रही है वह सब उनको पंहुच रही है फिर मैं यहीं बैठे–बैठे ग़ौर कर रहा था तो मैंने देखा कि जनाबे ज़ैनब भी जनाबे ज़हरा स0 के रूप में हैं जो तारीफ़ जनाबे ज़हरा स0 की हैं वह जनाबे ज़ैनब को पंहुचती हैं और जो जनाबे ज़ैनब की हैं वह जनाबे ज़हरा स0 को पंहुचती हैं तो जनाबे ज़हरा स0 की तौहीद में यह तीन शख़्सियतों की तस्लीस मुझे नज़र आई और इस तस्लीस में मुझे जनाबे ज़हरा की तौहीद नज़र आई और मैं कैसे उसकी यह तौजीह (वयाख्या) न करता क्योंकि मेंरे दोस्त ने तो यह बात करते हुए इस पहलू की तशरीह न की थी और अगर वह यह तशरीह न करते या मुझ तक न छोड़ते कि मैं यह तशरीह करूं तो फिर उन अज़मतों को कहां ले जाता मैं उन एहसानात को कहां दफ़न करता मैं उन शफ़कतों को कैसे भूलता मैं उस दौलत को कैसे भूलता जिसने इस्लाम को खरीद लिया और मैदाने करबला में जनाबे ज़ैनब अ0 के किरदार को आखिर कैसे भूल जाता जिनके बारे में एक शायर ने कहा और मुझे बहुत पसन्द आया।

जनाबे ज़हरा जवाबे मरयम
जवाबे ज़हरा जनाबे ज़ैनब
जनाबे ज़ैनब के बाद लेकिन
जवाबे ज़ैनब जवाबे ज़ैनब

तो जनाबे फ़ातेमा स0 का जनाबे ज़हरा का ख़ातूने जन्नत का सय्यदा का ज़िक्र जब होगा तो जनाबे खदीजतुल कुबरा का ज़िक्र होगा जनाबे ज़ैनब का ज़िक्र होगा ओर इस्लाम अबदुल अबाद (अनंत काल) तक इन तीन हस्तियों के एहसानात से छुटकारा नहीं पा सकता अगर इस्लाम की तारीख में से इन तीनों पाक शख्सियतों के एहसानात को हटा दिया जाए तो बाक़ी क्या बचता है मैं नहीं बता सकता।

मुझसे दोस्तों ने कहा कि मैं कुछ कहूं मगर मैं क्या कहूं लोग सरकारे दो अलम फ़ख़्रे मौजूदात सरवरे काएनात इमामुल अमबिया सय्यदुल मुरसलीन ख़ातमुन नबीय्यीन मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमदे मुजतबा स0 के वालेदैन के ईमान होने और न होने की बहस करते हैं ऐसी किताबें लिखी गयी हैं अनगिनत बहसें चलीं हैं। सलफ़ (पूर्वज) से ख़लफ़ (पुत्र) तक मगर मैंने उसे एक नुक़तए नज़र (दृष्टिकोण) से देखा और नुक़तए नज़र यह है कि यह मसला खुद आपने कैसे हल किया खुद सरकारे खातेमुल मुरसलीन ने किस तरह हम तक पंहुचाया और किस खूबसूरत अन्दाज़ में पंहुचाया बाप का साया न था तो जनाबे अबू तालिब अ0 को अपना बाप बनाया और वह मुजस्सम (साकार) इस्लाम बने। कुर्आने हकीम कहता है ''एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या है और हम जो

क़ुर्आन को बरतर मानते हैं हम कैसे यह तस्लीम करें कि जिस ख़ुदा के दीन पर अबू तालिब अ0 ने एहसान किया वह उसका बदला एहसान की सूरत में नहीं देगा। इस तरह उनको अपना बाप बनाकर जनाबे अब्दुल्लाह के ईमान का मसला भी ख़ुद आपने हल कर दिया अबू तालिब अ0 आपके बाप हैं उनके ईमान में किसी मोमिन को शक नहीं, उनके ईमान में मोमिन को शक नहीं हो सकता।

मैं तो यह मान मान सकता हूं कि उन हदीस बयान करने वालों से ग़लती हुई जिन्होंने वह हदीसें लिखी वह हदीसे पंहुचायी या यूं कहिये कि बनाईं। यह मैं नहीं कह सकता किसने बनायी मैं यह मान सकता हूं कि उनसे ग़लती सरज़द हुई वह ग़लती पर थे लेकिन मैं एक लम्हे के लिए ईमाने अबू तालिब अ0 में शक नहीं कर सकता वैसे भी फ़र्ज़ कीजिए अगर कोई शख़्स ज़ने ग़ालिब (अनुमान) से किसी ग़ैर मोमिन को मोमिन मान ले तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह तआला उस पर कोई जवाबदही नहीं करेगा लेकिन अगर किसी मोमिन को कोई आदमी काफ़िर क़रार दे बैठा तो ख़ुद उसके ईमान की ख़ैर नहीं। इस तरह वालिद की जगह जनाबे अबू तालिब अ0 को वालिद बनाकर ख़ुद ईमाने अब्दुल्लाह का मसला भी हल कर दिया और जब हज़रत ख़दीजतुल कुबरा की वफ़ात हुई। सय्यदा ने घर संभाल लिया। बचपने ही में घर संभाल लिया। बाप की खिदमत में दिन रात एक कर दिये तो सरकार ने फ़रमाया और वह बात फ़रमाई जो किसी के लिए आपने कभी नहीं फ़रमाई थी और किसी के लिए जिसका तस्सव्वुर (कल्पना) नही किया जा सकता फ़रमाया उम्मेअबीहा तुम अपने बाप की मां हो। उम्मेअबीहा सय्यदा स0 के बारे में इरशाद फ़रमाया और गोया इस तरह अपनी वालेदा के ईमान का मसला हल कर दिया कि जिस तरह ईमान में मेरी बेटी सय्येदतुन निसा (औरतों की सरदार) हैं ख़ातूने जन्नत हैं, उसी तरह हज़रत आमना का मर्तबा है तो जिस तरह मेरी बेटी का ईमान मुसल्लम है उसी तरह मेरी मां का ईमान भी मुसल्लम है।

हज़रात! लोग आज मसावात (बराबरी) की बात करते हैं और जब हम मसावात की बात करते हैं तो कहते हैं कि यह बाहरी नज़रिया है जिसे दरामद (आयात) किया जा रहा है किसे ख़बर कि जिसकी आस्तीन में ख़ुद आफ़ताब आलमताब होगा वह दूसरे टिमटिमाते हुए दिये को क्यों रश्क व हसद की नज़र से देखेगा जिस मज़हब के पास ख़ातूने जन्नत की काएम की हुई मसावात (बराबरी) हो। जिन्होंने अपनी कनीज़ फ़िज़्ज़ा मगर हमारे लिए लायक़े एहतेराम व अज़मत और हमारी मालेका के साथ यह मामला रखा कि एक दिन घर के काम वह करें और एक दिन ख़ुद आप करें उसे आख़िर इस दौरे मआशियात (आर्थिक युग) के नज़रिये–ए–मसावात से डरने की क्या ज़रूरत है ज़माना बलन्द हो कितना बलन्द होगा, जितना भी बलन्द होगा वहां इख़्तेताम (अन्त) करेगा जहां से ख़ातूने जन्नत की मसावात की शुरूआत होगी। अब उसके बाद यह शरमाना यह झिझकना यह मसावात के उसूल को नज़रिये को कुबूल करने से हिचकिचाना मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि लोग अपने ही घर की चीज़ को अपने ही इम्तेयाज़ (विशेषता को अपनी ही ख़ुसूसियत को ग़ैरों के सर क्यों मन्ढ़ रहे हैं ग़ैरों का क्रेडिट क्यों बना रहे हैं ग़ैरों के सर पर यह सेहरा क्यों बांध रहे हैं। एक दोस्त ने और एक बात कही।

मैं तो कुछ सोच के न आया था मैं तो अशआर (कविताएं) सुन सुन कर यहीं बैठ के सोंचता रहा और अशआर वहीं होते हैं जो एहसास मे तमव्वुज (उछाल) पैदा कर दे इंसान को सोचने पर मजबूर कर दे फिर वह अशआर अफ़कार (विचार) बन जाते हैं मैं यही सोच रहा था कि एक दोस्त ने कहा कि अहलेबैत का नुक्तए मरकज़ी जनाबे ज़हरा स0 की ज़ात है यह शायरी नहीं ऐन हक़ीक़त है इसलिए कि ख़ुद सरकार ने भी यही फ़रमाया था कि आप के बहुत से इरशादात हैं जिनका असल और ख़ुलासा यह है जिनका निचोड़ यह है जिनमें तकरार यह है कि रसूल अ0 और फ़ातेमा स0, अली अ0, हसन अ0 और फ़ातेमा स0 हुसैन अ0 और फ़ातेमा स0 इसलिए कि यह अगर मरकज़ न होता तो रसूल के अतवार (किरदारों) को आगे कौन पंहुचाता यह ज़ात अगर न होती तो रौशनियों का अक्स करबला के मैदान में कहां पड़ता इसलिए अहलेबैत अ0 का मरकज़ी नुक़ता ख़ातूने जन्नत हैं और जिसने कहा ठीक कहा। तारीख़ शाहिद है कि जो फ़रज़न्द भी आपकी आग़ोशे शफ़क़त में मचल कर निकला वह ऐसा बना जिसके बारे में कहा गया कि–

शगुफ्ता गुलशने ज़हरा का हर गुलेतर है
किसी में रंगे अली है किसी में बूए रसूल

हाज़रीने किराम! (उपस्थित सज्जनो) मुझे एहसास है कि आज मैं बिल्कुल ग़ैर मरबूत कलाम (असम्बन्धित बात) पेश कर रहा हूं जैसे एक ग़ज़ल में अलग शेर होते हैं मैंने आज की गुफ्तगू (बातचीत) के हर मोड़ पर अलग अलग बात कही है अलग अलग नुक़ता बयान किया है मैं जानता हूँ मुझे ख़त भी मिले जब मैं यहाँ आ रहा था कि यह जलसा जन्नतुल बक़ी के बारे में हो रहा है इस वास्ते से इस निस्बत से जो कुछ लिखा गया होगा जो कुछ कहा गया होगा आप जानते हैं उसके दोहराने और बयान करने की ज़रूरत नही काश मैं इतना आज़ाद होता कि मैं कह सकता लेकिन मैं आपको एक वाक़ेआ सुनाऊँ मैंने बचपन में बहुत सी चोरियां की होंगी कुछ याद आती है कुछ याद नहीं आती लेकिन एक चोरी मैंने शऊर (विवेक) में की जवानी में की जान बूझकर की सोच समझ कर की और इस चोरी पर मुझे बड़ा फख्र है मुझे इस पर निदामत कभी नही हुई कभी शर्मिन्दगी नहीं हुई मैंने चन्द साल पहले मोची दरवाज़े में उसका इज़हार भी किया था उस समय मैंने कुछ बातें और भी कहीं थी मैं उन पर क़ायम हूं मगर उनको दोहरा नहीं सकता सिर्फ इशारा ही कर सकता हूं सिर्फ इसलिए ताकि दोस्त यह समझ लें कि फर्ज़ अदा करने से ग़ाफिल नहीं हूं मैं जब मदीनतुर रसूल स0 में हाज़िर हुआ और आप को वह बहसें याद होंगी इमाम इब्ने तिमीया ने यह बहस की है और इमाम उनको मैं अहले इल्म में से होने की वजह से कहता हूँ। इस इमामत का मक़ाम और है जो ख़ानदाने नबूवत का खासा (विशेषता) है कि हाजी जो इरादा लेकर निकलता है नियत कर के निकलता है ज़ियारते रौज़–ए–रसूल स0 की, उसका हज हो जाता है यह तो ख़ैर उलमा की बातें है एक आमी हूँ और मैं अपनी बात सुना रहा हूँ कि मैंने जब हज का इरादा किया मदीनतुर रसूल स0 मेरे पेशे नज़र था और मैंने एक जगह लिखा है कि मैं मक्काए मुकर्रमा के बाद जब मदीनतुर रसूल स0 जाता हूँ तो मुझे यूँ लगता है कि जैसे मक्कतुल मुकर्रमा की हाज़री वुज़ू है और मदीनतुर रसूल स0 की हाज़री नमाज़, लेकिन जब मैं मदीनतुर रसूल स0 का क़सद करता हूँ ओर इरादा करता हूँ और मेरा खुदा गवाह है कि ऐसा कहते हुए मुझे किसी की तारीफ की तमन्ना नहीं है वेसे भी इस घर की तारीफ़ करने वालों को दाद कम मिलती है बेदाद ज़्यादा।

उस ख़ानदान से ताल्लुक बांधने वालों के लिए कभी ऐसा नहीं हुआ कि हटो बचो की सदाएं सुनी गयीं हों। तो मैं कह रहा था कि जब मैंने मदीनतुर रसूल का क़सद किया है तो मेरे पेशेनज़र दो बातें थीं एक दरबारे रसूल स0 में हाज़री और दूसरी जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार पर हाज़री।

और जब मैं पहली मरतबा पंहुचा जन्नतुल बक़ी में हाज़िर हुआ बहुत मैंने कोशिश की कि किसी तरह यहां से चोरी करूँ मज़ार के इर्द गिर्द जो शिकस्ता रोड़े छोटे–छोटे कंकर पत्थर पड़े हैं एक आध मैं किसी तरह सिपाही की नज़र बचाकर जेब में रख लूँ उस समय मुझे मौक़ा न मिला क्योंकि पहरा बड़ा सख़्त था और हम सरकारी ज़रिये से गये हुए थे हमारे साथ निगेहबानी करने वाले भी मौजूद थे फिर ऐसा हुआ कि मैं एक मरतबा लन्दन से आते हुए उमरा करने गया अकेला था कोई सरकारी निसबत न थी मैं पहुंचा तो जन्नतुल बक़ी में कोई न था मैं था जनाबे सय्यदा स0 का दरबार था दूर सिपाही खड़ा था मैंने जाते ही एक छोटा सा पत्थर जनाबे सय्यदा के मज़ार से उठा कर अपनी जेब में डाल लिया आप यक़ीन मानें कि आज अगर अपनी दौलत में मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ है तो जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार का वह पत्थर है मैं नही बताना चाहता था आज से चन्द साल पहले मैंने बताया था उस समय मैं बता सकता था आज नहीं बता सकता कि जनाबे सय्यदा स0 की क़ब्र ने मुझसे क्या कहा मुझसे क्या बात की। कुछ कहा मैंने कानों से सुना यह इस तरह की सरगोशी (फुसफुसाहट) तो नहीं थी। मेरे मुंह में ख़ाक यह तशबीह (तुलना) तो नहीं हो सकती कि जैसे जनाबे सय्यदा स0 के वालिदे माजिद ने दुनिया से जाते समय जनाबे सय्यदा स0 के कान में सरगोशी की थी लेकिन किसी न किसी अन्दाज़ की सरगोशी जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार से मेरे कानों में पंहुची कोई हुक्म मिला कोई बात कही गयी मैं उससे ग़ाफ़िल नहीं हुआ।

(इमामिया मिशन का प्रकाशन नं0 865)